जिसको ज्ञान, उसका मान

(साक्षरता की कथाएँ)

लेखक

साने गुरुजी

हिन्दी अनुवाद

गायत्री पलशीकर

बनवासी सेवा आश्रम

जिसको ज्ञान, उसका मान
JISKO GYAN, USKA MAAN

- लेखक :

  साने गुरुजी

- हिन्दी रूपान्तरण :

  श्रीमती गायत्री पलशीकर

- चित्रांकन :

  श्याम कुमार

- लेजर टाइप सेटिंग :

  रामनिवास पाण्डेय

- **सर्वाधिकार सुरक्षित**

- हिन्दी संस्करण :

  ७ नवम्बर, १९९८

- सहयोग राशि :

  रुपये ८/- मात्र

- प्रकाशक :

  बनवासी सेवा आश्रम

  गोविन्दपुर, सोनभद्र (उ०प्र०) २३१ २२१

- मुद्रक :

  जीवन शिक्षा मुद्रणालय, गोलघर-वाराणसी

आभार

साक्षरता की बात जब कभी होती है तो सामान्यतया लिखने-पढ़ने की और गुणा-भाग की कुशलता की बात मन में उभरती है। निरक्षर व्यक्ति कई बार हस्ताक्षर करने की क्षमता को ही 'साक्षर' होना समझता है। अभिमान से कहता है कि वह अंगूठा नहीं लगाता। परन्तु साक्षरता का कार्यक्रम चलाने वाले व्यक्ति साक्षरता को जीवन सम्बन्धी जानकरी, ज्ञान प्राप्त करने का साधन मानते हैं। यही कारण है कि उत्तर साक्षरता के लिए साहित्य सृजित करने का व उसके प्रचार-प्रसार का प्रयत्न सर्वत्र हो रहा है।

यह पुस्तक 'जिसको ज्ञान, उसका मान' (साक्षरता की कथाएँ) महाराष्ट्र के प्रतिष्ठित संत 'साने गुरुजी' की मराठी पुस्तक 'साक्षरतेच्या कथा' का अनुवाद है। साने गुरुजी द्वारा स्थापित साधना प्रकाशन ने अनुवाद के लिए अपनी अनुमति देकर हमें उपकृत किया है।

बनवासी सेवा आश्रम को साक्षरता कार्य का पहला प्रयोग श्रीमती वेल्थी होशिंगर फिशर के मार्गदर्शन में व उनके साक्षरता निकेतन के सहयोग से वर्ष १९६८ में हुआ था। बीच-बीच में भी उनका सहयोग मिला है। साक्षरता को जीवन की व्यवहारिकता के परिप्रेक्ष्य में ग्राम समाज की नव रचना के साथ जोड़ने के विचार से साक्षरता की पुस्तकें बनवासी सेवा आश्रम द्वारा लिखी गई एवं क्षेत्र में उनका प्रयोग किया गया। पुस्तकें तैयार करने की श्रृंखला में यह पुस्तक आपके हाथों में है। इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद का काम कुछ समय तक लम्बित रहा। परन्तु इस कार्य को आश्रम मित्र श्रीमती गायत्री पलशीकर ने हमारे लिए सुकर बनाया। आश्रम परिवार इसके लिए उनका आभारी है।

आश्रम के कार्यकर्ता श्री रामनिवास पाण्डेय जी ने हिन्दी रूपान्तरण का कंप्यूटर पर अक्षर संयोजन किया। इसके चित्रांकन एवं प्रकाशन के लिए सदैव तत्पर एवं प्रयत्नशील रहे। हम पाण्डेयजी के भी आभारी हैं।

हिन्दी रूपान्तरण के संशोधन/संपादन एवं प्रकाशन में हमें साक्षरता निकेतन-लखनऊ के श्री विश्वनाथ सिंह एवं श्री श्यामलालजी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः हम उनके विशेष आभारी हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में श्री शरदकुमार साधक जी (मंत्री, आचार्यकुल) का भी विशेष मार्गदर्शन मिला है। हम श्री साधकजी के भी आभारी हैं।

हम विश्वास करते हैं कि आश्रम के प्रकाशनों में इस पुस्तक का विशेष महत्व होगा। हम उत्तर साक्षरता/सतत शिक्षा के लिए जो सामग्री नवसाक्षरों को देते हैं, उसमें इस पुस्तक से नवपाठक अपने जीवन को विकसित करने में प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

– डॉ० रागिणी बहन

समर्पण

ज्ञान तपस्विनी तथा विद्या

प्रदायिनी

परमपूज्या माताजी

को

सादर समर्पित

सूची—

क्र० सं०	पृष्ठ सं०
१. पैडाल की रमी	७
२. डर भगाने वाला मंत्र	१५
३. जिसको ज्ञान, उसका मान	२१
४. मनुष्य बनने के लिए पढ़ो	३१
५. मंदी की आँख	३५
६. ज्ञान ही सच्ची ज्योति	३८

१ : पैडाल की रमी

वह देखो अंधेरी कोठरी। कौन रहता है उस कोठरी में? कौन रहेगा? गरीब के सिवाय कौन रहेगा? रमी रहती है वहाँ। उसका एक लड़का मुम्बई की एक आटा चक्की में काम करता है। वह रमी को पैसे भेजता है। परन्तु उस पाँच-दस रुपये से गृहस्थी थोड़े ही चलती है। घर में और भी चार बच्चे हैं। पति को मरे दो वर्ष हो गये। रमी के ऊपर घर का सारा भार है। बड़ा लड़का मुम्बई चला गया। बहुत बड़ा है क्या यह? बड़ा कहाँ? सत्रह-अट्ठारह वर्ष का होगा। पर माँ से बोला–"मैं जा रहा हूँ। एक का भरण-पोषण कम हो जायेगा, भाइयों के लिए कुछ पैसे भेजूँगा।" और सच में उसने पैसे भेजे।

रमी मजदूरी करती। खेत में जाती। खान देश की गर्मी, परन्तु गरीबों के लिए न गरमी, न सर्दी, सर्दी उन्हें कुड़-कुड़ाती और गर्मी उन्हें जलाती। रमी की दस-बारह बरस की लड़की थी। वह भी काम करने जाती थी। गरीबों के बच्चों को जल्दी ही काम पर लगना पड़ता है।

घर में बच्चों के लिए रोटी पकाकर रख देती और रमी काम पर चली जाती। वहाँ वह काम पर होती, पर उसका ध्यान

बच्चों पर रहता। एक दिन जब वह काम से लौटी तो उसकी बड़ी लड़की बुखार से तप रही थी। फटे हुए कम्बल को ओढ़ कर पड़ी थी।

"बेबी क्या हुआ है तुम्हें?" रमी ने पूछा।

"बुखार है माँ। काम पर से जैसे-तैसे में घर आई, बैठो न माँ मेरे पास।" वह बोली।

आठ दिन हो गये। बुखार हटने का नाम ही नहीं। रमी से काम पर जाते भी नहीं बनता। परन्तु घर में जहर खाने को भी धेला नहीं था। वहाँ बड़े बेटे की भी नौकरी छूट गई थी। कौन भेजता पैसे? कैसे दवा-पानी कराये? कौन मोसम्मी लाता? गरीबों की दीन-हीन स्थिति।

पैडाल के उस भाग में केवल गरीबों की बस्ती थी। सवेरे सात के बाद कोई भी घर पर नहीं मिलता था। गाँव में केवल छोटे बच्चे और कुत्ते ही घर पर रहते थे। बाकी पूरी गली काम पर होती थी।

आज दोपहर के समय एक डाकिया आया। "रमी, कौन है रमी?" कहने लगा। रमी लड़की के माथे पर हाथ रखे बैठी थी। आँखों से आँसू टपक रहे थे।

"मैं रमी हूँ, भाई," वह बोली।

"कितना खोजूँ! ठीक से पता भी नहीं है, मनीआर्डर है। पैसे आये हैं।"

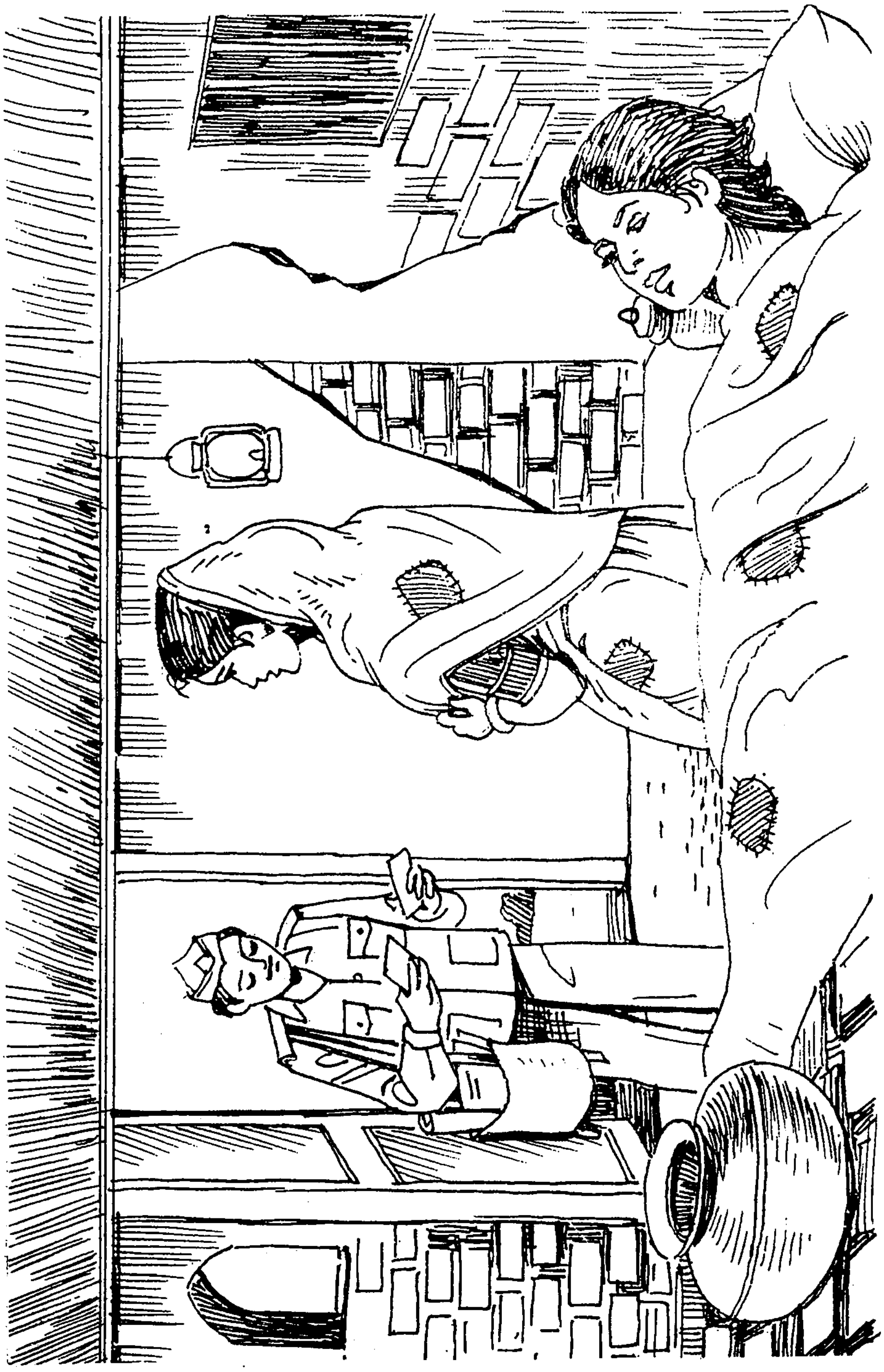

“लड़के ने भेजा है, है ना?”

“लड़के ने भेजा है या किसी चोर ने, मुझे नहीं मालूम।”

“वह पहले वाला डाकिया था, तुम तो नये मालूम होते हो।”

“उसकी बदली हो गई है, हस्ताक्षर करो।”

“मुझे कहाँ हस्ताक्षर करने आता है? मुझे क्या लिखना है दादा?”

“अंगूठा लगाओ, यहाँ किसी की गवाही भी जरूरी है, किसी को बुलाओ।”

रमी ने इधर-उधर देखा। कहीं एक चिड़िया तक नहीं।

“दादा, सभी काम पर गये हैं। किसे बुलाऊँ? पैसे दे दो, मेरे ही है। लड़की बुखार से तप रही है। लड़की को बड़े डॉक्टर को दिखलाऊँगी। उसे ये पैसे दूँगी।”

“गवाही के बिना मैं पैसे किसे दूँ? मैं तो चला।”

“कल आओगे क्या भाई?”

“इस गाँव में हफ्ते में केवल दो बार डाकिया आता है। कल कैसे आऊँगा, अब चार दिन बाद, मैं अब जा रहा हूँ। मेरे लिए क्या यही एक गाँव है?”

वह डाकिया चला गया। उसे और भी दूसरे गाँव में जाना था। रमी रोने लगी– बेटे ने पेट काटकर पैसे भेजे होंगे। परन्तु

मिले नहीं। अपने पैसे होकर भी अपने नहीं। कहता है हस्ताक्षर करो। क्या मुझे लिखना-पढ़ना आता है? इस तरह विचार करते हुए वह लड़की के पास जाकर बैठ गई।

दिन का तीसरा पहर है। वह लड़का कौन है? उसके चारों ओर लड़कों की भीड़ कैसी? किसी को वह तस्वीर दे रहा है। किसी को खट्टी-मिट्ठी लेमनचूस की गोली। उसने एक लड़के से कहा–

"तुम्हारे हाथ में तो खुजली है! रुको, यह मलहम लगाता हूँ। रोज हाथ धोकर इसे लगाना।"

"मेरी आँख तो देखो?"

"देखूँ? लाल हो गई है। अगली बार आऊँगा तो दवा लेते आऊँगा।"

"उस रमी के घर आओगे क्या? उसकी लड़की बेबी बहुत बीमार है।"

"दिखाओ उसका घर।"

रमेश रमी के घर आता है। बेटी के पास माँ बैठी थी।

"माँ देखो गाँधी आया है।"

"मैं सेवादल का एक लड़का हूँ। हम लोग गाँव-गाँव जाकर दवा वगैरह देते हैं। क्या हुआ है लड़की को?"

"बुखार, बहुत तेज बुखार है! मैं डॉक्टर कहाँ से लाऊँ, आज लड़के का भेजा हुआ पैसा आया था। सोचा कि सोन गाँव के डॉक्टर को बुलाऊँगी। मगर पैसे नहीं मिले?"

"क्यों नहीं मिले?"

"मुझे हस्ताक्षर करना नहीं आता। गवाही के लिए कोई आदमी नहीं मिला। गाँव में कोई स्कूल नहीं है। नहीं तो गुरूजी की गवाही दिलवाई होती। वह पहले वाला डाकिया परिचित था। किसी की भी गवाही पर पैसे दे देता। यह नया था। पैसे आकर भी नहीं मिले।"

"माँ मैं डॉक्टर ले आता हूँ। लड़की ठीक हो जायेगी। परन्तु तुम सबको लिखना-पढ़ना सीखना चाहिये।"

"किस समय सीखेंगे दादा?"

"रात में एक घण्टा! मैं यहाँ रात का स्कूल खोलूँगा। तुम सब लोग आओगे?"

"मैं आऊँगी। मेरे बच्चे आयेंगे। हम सब लोग पढ़ेंगे। फिर मैं अपने लड़के को चिट्ठी भेजूँगी। वह भी मुम्बई में पढ़ना सीख रहा है। पैसे आकर भी मिले नहीं। शिक्षा नहीं, अक्षर नहीं तो सब बेकार।"

रमेश दूसरे दिन डॉक्टर को ले आया। दवा मिलने पर बेबी ठीक हो गई। रमेश उसी गाँव में आकर रहने लगा। छोटा

सा गाँव। उसने वहाँ एक स्कूल खोला। शाम के समय बच्चे पढ़ते, रात्रि में बड़े। एक दिन पुरुषों की मण्डली होती, तो दूसरे दिन स्त्रियों की। बेबी और उसकी माँ ने सभी स्त्रियों को बुलाया। गाँव में सेवादल आया है। स्वच्छता आई। साक्षरता आ गई। छोटे-छोटे उद्योग विकसित होने लगे। रमेश को सभी लोग दुआ देते। सेवादल को दुआ देते। परन्तु रमेश कहता– इसका सारा श्रेय बेबी की माँ को है। वह बेचारी सबसे पहले पढ़ने को तैयार हुई, उसी के कारण सारा गाँव तैयार हुआ। शिक्षा बिना गति नहीं, यह उसकी समझ में आ गया। ज्ञान का मतलब है ***भगवान!*** लिखना-पढ़ना चाहिए, नहीं तो पग-पग पर दिक्कतें होगी। लिखना-पढ़ना आता है, मतलब आजकल जीवन का सबसे बड़ा आधार है। ऐसा बोलकर रमेश गाने लगा। उसके साथ बच्चे, प्रौढ़ स्त्री-पुरुष भी गाने लगे :–

पढ़ें ...... पढ़ें ......

हम पढ़ें - पढ़ें,

सबको लेकर आगे बढ़ें।

अक्षर - अक्षर

गीत बने,

शब्द - शब्द संगीत बने,

एक नया संसार गढ़ें।।

पढ़ें - पढ़ें

हम आगे बढ़ें ।।

(गाना गाते-गाते सभी बच्चे नाचने लगते हैं)

●

❖ *पिछड़ापन का एक इलाज,*
साक्षरता का पहनो ताज।
ओ मेहनत करने वालों,
पढ़ना-लिखना सीखो।।

❖ *शिक्षा का यह कैसा हाल,*
दूर कलम से हुई कुदाल।
श्रम, बुद्धि का नाता जोड़ो,
मेहनत से तुम, नफरत छोड़ो।।

❖ *पढ़ी-लिखी नारी,*
घर की उजियारी।
पढ़ी-लिखी माता,
घर की भाग्य विधाता।।

२ : डर भगाने वाला मंत्र

उस गाँव की मालिनें साग-भाजी उगाती थीं। जहाँ-जहाँ गाँव का साप्ताहिक बाजार लगता, वहाँ-वहाँ जाती थीं। वे बहुत कामकाजी और मेहनती थीं। भारी टोकरी उठाकर चार-चार कोस तक चलती थीं और शाम को दीया जलने पर घर लौटती थीं। फिर चुल्हा जलाकर रोटी पकातीं, बच्चों को पास बुलातीं।

पाचोर का साप्ताहिक बाजार बड़ा मशहूर था। जहाँ देखो वहाँ दूकान ही दूकान। एक तरफ स्थान लेकर मालिनें भी बैठतीं। आज मालिनों के पास ही एक माली दादा भी सब्जी लेकर बैठा था। मालिनें आपस में फुसफुसा रही थीं, परन्तु इस समय बोलने का मौका नहीं था। ग्राहकों की भीड़ थी। सब्जियाँ बिक रही थीं। पैसे जमा हो रहे थे। बैगन, शकरकन्द, ग्वालफली, गोभी, फूलगोभी, मेथी आदि अनेक प्रकार की सब्जियाँ थीं। धनिये की सुगन्ध फैली हुई थी।

इतने में एक मनुष्य बड़ा सा थैला लिए हुए आया, जो-जो सब्जी चाहिए, लेने लगा- चार बैगन, चार शकरकन्द, धनिये की एक गड्डी, नीबू, इस तरह वह सब्जी उठाता चल रहा था। कौन है वह? मालिनें उसको देखकर कहती- ले लो भइया, और सब्जी ले जाओ, क्या करतीं वे बेचारी? वह सब्जी तो

मालिनों की ही थी, पर ऐसा मालूम होता था कि सब्जी ले लेना उस आदमी का अधिकार था और वे मालिनें हमेशा उसकी देनदार थीं।

वह मनुष्य उस माली दादा के पास आया। उसके पास ताजी और बड़ी-बड़ी मूली थी, उस आदमी के मुँह में पानी आ गया। उसने एक जोड़ी मूली उठा ली।

"नीचे रखो इस मूली को! फोकट में लेने का क्या अधिकार है? मत लो, नीचे रखो," माली दादा बोले। मालिनें देख रही थीं। उनको आश्चर्य हुआ। अब क्या होगा? वे देख रही थीं। अपमान उस मनुष्य से सहन नहीं हुआ। आज तक किसी ने उसको इस तरह नहीं बोला था। वह अकड़ते हुए बोला– "नीचे रखो बोलते हो, तो मैं दूसरी भी ले रहा हूँ। तुम मुझे क्या समझते हो?"

"तुम पुलिस वाले हो?"

"याद रखो।"

"याद तो तुम्हीं रखो। अब जनता का राज्य है। इस तरह गरीबों को सताना अच्छी बात है क्या?"

"मुझे भाषण मत दो।"

"रक्षा करने वाली बाड़ ही अगर खेत को खायेगी, तो भइया खेत किसके पास जायेगा? तुम प्रजा की रक्षा करने वाले हो और तुम्हीं उसे लूटने लगे। इतने दिनों तक चल गया, अब

नहीं चलेगा भइया, सनय के अनुसार चलो। अब नया जमाना आया है।"

"चुप बैठो। मुझे सिखाते हो।"

उस माली दादा ने जेब से एक डायरी निकाली, उस डायरी में एक छोटी सी पेंसिल बंधी थी। सिपाही देख रहा था। मालिनें इधर ही देख रही थीं। दूसरे लोग भी रुक कर देखने लगे थे। सभी को आश्चर्य हो रहा था।

माली दादा सिपाही से बोला– "अपना नाम बताओ। मुझे लिखना है। मैं आज तुम्हारी शिकायत करूँगा। प्रेम से माँगकर थोड़ी सी सब्जी ले लेते तो दूसरी बात थी। इतनी मँहगाई है। हो सकता है तुम्हारा वेतन कम हो। पर इस तरह की जबरदस्ती। इस तरह नहीं चलेगा, नाम बताओ।"

सिपाही घबरा गया। उसने मूली नीचे रख दी। मालिनों की सब्जी भी वापस कर दी।

"जाता हूँ भइया! तुमने मुझे पाठ पढ़ाया। स्वराज्य का अर्थ बता दिया। शिकायत मत करो। नाम मत लिखो। अब दुबारा यहाँ नहीं आऊँगा।" पुलिस वाला नम्रता से बोला।

"गुस्सा मत करो सिपाही दादा। हम सब भाई ही हैं। ले लो यह मूली, सच में लो। पर मुफ्त में किसी की सब्जी मत उठाना।" माली दादा प्रेम से बोला। उसने उसको प्रेम से मूली और दूसरी सब्जी दे दी। पुलिस वाला चला गया। बाजार चालू

था। शाम हो गई। मालिनें चली गईं। माली दादा भी गया।

साप्ताहिक बाजार में वह माली दादा हमेशा ही आता। परन्तु अब पुलिस वाला कभी भी मुफ्त में सब्जी लेने नहीं आता। इन मालिनों को बड़ा अटपटा लगा। एक बार मालिनें मालीदादा से पूछने लगीं– “क्यों भइया, अब तो वह पुलिस वाला सब्जी लेने नहीं आता। तुमने उसको कौन सा मंत्र पढ़ाया? कौन सा जादू उस पर किया?”

“मेरे पास एक ही मंत्र था।”

“कौन सा?”

“नाम लिखता हूँ, कहते ही आदमी डर जाता है। अब तो स्वराज्य है। यदि कोई परेशान करता है तो ऊपर लिखकर शिकायत करो। ज्ञान का मंत्र है पढ़ना-लिखना, तुम स्त्रियों को पढ़ना-लिखना आता नहीं, अतः पढ़ो।”

“हम अब क्या सीखें।”

“क्यों क्या तुम मनुष्य नहीं हो? प्रत्येक मनुष्य को पढ़ना-सीखना चाहिये। स्त्रियाँ स्वराज्य की लड़ाई में जेल भी गईं। अभी भी क्या वे पिछड़ी हुई हैं?”

“ठीक है भाई! जलगाँव की उस अनुसूइया ने पुलिस चौकी पर झण्डा फहराया था। हम भी पढ़ेंगे। पर हमको पढ़ायेगा कौन?”

“सेवादल के लड़के पढ़ायेंगे। सेवादल में लड़कियाँ भी पढ़ेंगी।

हमारे गाँव की जमनी पढ़ाती है। मैं उसको कहूँगा, लेकिन तुम पढ़ोगी?"

"पढ़ेंगे, हम सभी पढ़ेंगे।"

"ठीक है! जब हम सभी पढ़ेंगे, तभी स्वराज्य टिक सकेगा। तभी सब सुखी होंगे। शिक्षण से डर भाग जाता है। अर्थ समझ में आने लगता है। ज्ञान का मतलब है भगवान।"

"कितना अच्छा बोलते हो तुम दादा।"

"जमनी आयेगी तुम्हारे गाँव में, तुम्हारा गाँव कौन सा है?"

"हम सब बिल्दी की हैं।"

और सच में, सेवादल की जमनी बिल्दी जाने लगी। माँ-बहनें पढ़ने लगीं। वे सभा में बोलने लगीं। भाषण की टिप्पणी रखने लगीं। बिल्दी गाँव में कोई निरक्षर नहीं रहेगा, ऐसा गाँव वालों ने निश्चय किया। उनका संकल्प अवश्य पूरा होगा।

●

३ : जिसको ज्ञान, उसका मान

पंढरपुर की कार्तिक यात्रा पास आ रही थी। वरहाड़ खानदेश की तरफ के लोग श्रद्धालु और भक्त होते हैं। हजारों यात्री पंढरपुर की यात्रा में जाते थे।

वह एक छोटा सा स्टेशन था। किसान पंढरपुर की यात्रा पर थे। उनकी ऊँची पताकाएँ थीं। हाथ में करताल थे। किसी के पास वीणा थी। चालीसगाँव रेलवे लाईन के ऊपर वह स्टेशन था। जामदे उसका नाम था। गाड़ी का समय हो रहा था। घंटा बजा।

"दे दो भाई, जल्दी टिकट दो, गाड़ी आ जायेगी।"

"पैसे हैं क्या?"

"हम क्या फोकट में टिकट माँग रहे हैं? किसी को भी फोकट में नहीं चाहिए। हम लोग किसान हैं। सारे संसार का पोषण करते हैं। हमें फोकट में नहीं चाहिए। जल्दी दो टिकट। चार टिकट दो।"

"बीस रुपये दो।"

"बीस?"

"हाँ बीस।"

"एक टिकट के पाँच रुपये।"

"हाँ, हाँ।"

"पहले तो कम था?"

"अब बढ़ गया। तुम्हारे दादा के समय रेलगाड़ी भी थी क्या? समय हमेशा बदलता है। दो बीस रुपये।"

"लो! क्या करोगे। सभी जगह महँगाई है। पेट को भोजन कम कर, देव दर्शन जरूरी है। विट्ठल के पैरों पर माथा टेकना है। लो, टिकट दो, यह चार नोट पाँच-पाँच के।"

चार टिकट लेकर किसान फाटक पर खड़े थे। भक-भक करती गाड़ी आई। गाड़ी में खूब भीड़। परन्तु किसी ने उनको अन्दर खींचा। कौन था वह?

"दादा तुम थे, इसलिए यह एकतारा टूटा नहीं। नहीं तो बाप-दादा के जमाने का एकतारा नीचे गिर गया होता।"

"तुम एकाध भजन गाओ।"

"गाऊँ, तुम्हें भजन पसन्द है?"

"मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।"

उस किसान ने बहुत सुन्दर भजन सुनाया। रघुनाथ आँखें बन्द कर भजन सुन रहा था। भजन खत्म हो गया। उसने आँखें खोलीं।

"तुम क्या करते हो?" किसान ने पूछा।

"मैं सेवादल में काम करता हूँ। सड़क साफ करता हूँ। लोगों को सिखाता हूँ कि भेदभाव मत करो।"

"साधु-संतो ने यही बताया है।"

इतने में एक ने धीरे से टिकट निकाला और पूछा- "ये टिकट देखो, कहाँ के हैं।"

"पंढरपुर के।"

"ठीक हैं और कितने का है?"

"साढ़े चार रुपये का।"

"अरे, हमसे तो उसने पाँच-पाँच रुपये लिये।"

"तुमने दिया कैसे! इसके ऊपर तो लिखा है।"

"स्टेशन मास्टर ने बोला- एकादशी है, इसलिए महँगा है।"

"एकादशी के दिन शकरकंद महँगी होती है, मूँगफली महँगी होती है। टिकट क्यों महँगा होता है?"

"हमें क्या मालूम भाई।"

"तुम लोग पंढरपुर जाओगे, पर पढ़ोगे नहीं। ज्ञानदेव ने ज्ञानेश्वरी तुम्हारे लिए लिखी है। परन्तु पढ़ना कोई नहीं सीखता? ऐसे अनाड़ी ही रहोगे। तब तो सारा संसार ही तुम्हें उल्लू बनायेगा। अपमान करेगा। पढ़ो! सेवादल के सैनिक तुम्हें पढ़ाएँगे। अगले साल पंढरी को जाना तो ज्ञानेश्वरी, गाथा, गीताई पढ़ते हुए जाना, ठीक है ना!"

"ठीक ही है भाई। हमें पढ़ना ही चाहिए। किसानों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। सारे संसार को वे पालते हैं, पर उनका सब जगह अपमान होता है।"

"अब ज्ञान मिलने दो। स्वराज्य हाथ में लो। जिसको ज्ञान, उसका मान।"

"तहसील, कचहरी आदि में जिसके हाथ में अखबार होता है, उसी को बैठने के लिए कुर्सी देते हैं। और हमें दूर बैठाते हैं।"

"ठीक है! तुम लोग पढ़ना सीखो। खेत का काम करते-करते दोपहर में पेड़ के नीचे बैठकर जब अखबार पढ़ने लगो, तभी स्वराज्य आयेगा। समझे ना।"

"हाँ, आज तुमने आँखें खोल दीं। ठीक, अब तुम्हारी सौगन्ध। पढ़े बिना हम नहीं रहेंगे।"

"अच्छा, अब भजन सुनाओ।"

उस किसान यात्री ने फिर एक सुन्दर भजन सुनाया। रघुनाथ आँखें बन्द किये सुन रहा था।

"गाँधी बाबा की सौगन्ध–पढूँगा।"

हिन्दू धर्म में ज्ञान का महत्व बताते हुए ज्ञान रूपी परमेश्वर, ऐसा कहा गया है। ब्रह्मा की व्याख्या भी ऐसी ही है। पैगम्बर मुहम्मद भी कहते थे, जिनको सृष्टि का ज्ञान मिला, उसने सौ बार नमाज पढ़ ली। ज्ञान के लिए हजारों मील जाना पड़े तो जाओ। ऐसा कथन है। यूरोपीय स्त्रियाँ अकेले ही सारे संसार

में घूमती हैं। जिनको न कोई डर है न भय। कारण उनको सब मालूम है। परन्तु हिन्दू स्त्रियाँ कहीं भी अकेले जा नहीं सकतीं। उनको कुछ भी मालूम नहीं है। पढ़ना आता नहीं, कहाँ पूछताछ करेंगी! समझ में आता नहीं, इसलिए परेशानी होती हैं। तुकाराम महाराज ने कहा कि–

"अवगुणी के हाथ में हमेशा परेशानी ही होती है।"

समर्थ गुरू कहते हैं–

"दिन भर में कुछ न कुछ लिखना चाहिए। प्रसंग पड़ने पर नियमित रूप से पढ़ना भी चाहिए।"

परन्तु समर्थ की वाणी हमने सुनी नहीं। अज्ञान के कारण ही हम गुलाम रहे। अब स्वराज्य आ गया है। यदि सभी सुशिक्षित होंगे, तभी स्वराज्य टिकेगा।

वह देखो एक औरत! अकेली ही दिख रही है। उसे कहाँ जाना है? दादर स्टेशन पर वह कब से खड़ी है। पूना, मद्रास, नागपुर सब जगह जाने वाली गाड़ियाँ सब यहाँ से जाती हैं। इस औरत को कहाँ जाना है। एक के बाद एक गाड़ी तो आ रही है। वह देखो, गाड़ी आ गई। औरतों के डिब्बों मे वह औरत घुसी। बगल में गठरी लेकर बैठ गई। गाड़ी चलनी शुरू हुई। पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ डिब्बे में थीं। कोई पत्ते खेलने लगीं। कोई सलाई निकाल कर बुनने लगीं। कर्जद स्टेशन आया। दो लड़कियाँ अन्दर आईं। उन्हें बेंच पर जगह मिल गई। बुढ़ी औरत नीचे बैठी थी।

"दादी अम्मा, इधर ऊपर बैठो।" सरला बोली।

"मैं यहीं पर ठीक हूँ।" बूढ़ी औरत बोली।

"अरे! उनके यहाँ छूआ-छूत होगा। रहने दो उन्हें पैखाने के पास कोने में।" एक प्रतिष्ठित औरत बोली।

"आओ दादी अम्मा, मेरे पास बैठो! नीचे गंदा है।" विजया बोली।

"इतने में सुरंग आया! एक बड़ा सा सुरंग।"

"यह गाड़ी कहाँ जायेगी?" बूढ़ी औरत ने पूछा।

"पूना।" सरला बोली।

"पूना?"

"हाँ क्यों, घबराइये नहीं।"

"मुझे तो येवल्य जाना था, यह गाड़ी नासिक की गाड़ी नहीं है क्या?"

"वह तो इस गाड़ी से पहले थी।"

बूढ़ी औरत क्या करे, यह उसे समझ में नहीं आ रहा था। अब मेरा क्या होगा?

"घबराओ मत, पूना चलो हमारे यहाँ। हम तुम्हें दौंड से मनमाड की गाड़ी में बैठा देंगे। जो सीधे येवल्य को जाती है। साथ में कोई नहीं होता तो ऐसे ही परेशानी होती है।"

"दादी अम्मा अगर तुम्हें पढ़ना आता तो ऐसी परेशानी

नहीं होती। गाड़ी पर लिखा होता है। येवल्य कौन सी गाड़ी कब आयेगी। यह समय-पट्ट पर लिखा होता है। तुम्हें पढ़ना आता नहीं। घड़ी देखना आता नहीं। इसलिए यह परेशानी हुई।"

"ठीक कह रही हो बेटी।"

"अब लिखना-पढ़ना सीख लो। हम सब सेवादल की लड़कियाँ हैं। हम सब कर्जत में क्लास लेती हैं। छोटी-छोटी लड़कियों के साथ चार-चार बच्चों की माँ, किसानों की पत्नियाँ भी पढ़ने आती हैं। खूब मजा आता है। छोटी लड़कियाँ बड़ी-बड़ी औरतों की गलतियाँ ठीक करती हैं।"

"मैं अब क्या पढूँगी।"

"क्या हुआ पढ़ने में! जो परेशानी होती है वह तो टलेगी। पर पहले यहाँ ऊपर बैठो। हम तुम्हारी लड़की की तरह ही हैं। तुम्हें बापू की कहानी पढ़ कर सुनाएँ।"

"बापू जी की?"

"मतलब महात्मा गाँधी जी की।"

"क्यों री लड़कियों, हरि विजय है, राम विजय है, वैसे ही महात्मा विजय कोई क्यों नहीं लिखता है। गाँव-गाँव के लोग पढ़ते हैं। उनका सप्ताह मनाते हैं। हम स्त्रियाँ उन्हें सुनती हैं। देवपुरुष थे महात्मा जी! कैसी गोली दागी उसने उनके ऊपर, और उसे ही उन्होंने हाथ जोड़ा! धन्य हैं वे।"

“दादी माँ, हमारे सेवादल के साने गुरुजी श्री गाँधी विजय लिखने वाले हैं। १०८ अध्याय लिखने वाले हैं। उनकी ***“श्यामू की माँ”*** पुस्तक तुमने पढ़ी है क्या?”

“मुझे पढ़ना नहीं आता। परन्तु हमारे बगल के एक दादा रोज रात में उसको पढ़ाते थे। मैं सुनने के लिए जाती थी। सनते-सुनते आँखों में पानी आ जाता था। वे क्या गाँधी विजय लिखने वाले हैं? अच्छा होगा।”

“पर आप पढ़ना सीखिए।”

“तुम्हारे जैसी लड़कियाँ मिलेंगी, तभी तो सीखूँगी।”

“सेवादल में मिलेंगी, पर एक बात कबूल करो, पढ़ना-लिखना सीखोगी?”

“सीखूँगी जी– तुम्हारे गाँधी बापू की सौगन्ध।”

●

❖ गाँव की धरती, गाँव का राज।
गाँव-गाँव में ग्राम स्वराज्य।।

❖ जल, जंगल, जमीन की व्यवस्था
गाँव में।
हर खेत को पानी, हर हाथ को काम,
ग्रामस्वराज्य में।।

❖ जूता, साबून, कपड़ा, तेल बने
गाँव में।
ग्रामोद्‌योग, कुटीर उद्‌योग बढ़े
ग्रामस्वराज्य में।।

❖ गाँव के झगड़े गाँव निबटाएँ।
पुलिस कचहरी कोई न जाएँ।।

४ : मनुष्य बनने के लिए पढ़ो

उस वर्ष खूब बारिश हुई। किसान खुश थे। खेती अच्छी हो रही थी। सोलह आने फसल अच्छी होगी। ऐसा लोग कहते। सरकारी लगान तय हो गई। परन्तु किसानों के हाथ वास्तव में अन्न आएगा, तभी मालूम पड़ेगा। कभी रोग लग जाता, कभी टिड्डे आते, कभी चूहे खा जाते। कभी वर्षा की कमी, कभी असमय वर्षा, किसानों का सब कुछ भगवान के हाथ।

और सच में मुसलाधार बारिश हुई। हाथ-मुँह तक आया अनाज मिट्टी में मिल गया। कपास की फसल गई, मूँगफलियों में अंकुर निकले। नदी, तालाबों में पानी भर गया। नदी किनारे वाले खेतों में बालू और मिट्टी इकट्ठा हो रहा है। आकाश भी बरस रहा था और किसानों के आँखें भी बरस रही थी। सारी मेहनत मिट्टी में मिल गई थी।

अनेक स्थानों पर किसानों की सभाएँ होने लगीं– वसूली माफ करो। लगान माफ करो। किसानों को सहूलियत दो। ऐसा निश्चय होने लगा। सरकार क्या करेगी? उसी तरफ सभी की दृष्टि थी।

कलेक्टर के पास शिष्ट मण्डल गया। "विचार करेगा।" साहेब बोले।

कुछ दिनों के बाद गाँव-गाँव में चौपालों पर यह जाहिरनामा लगा था।

"किसानों के खेतों में कितना अनाज पैदा हुआ। खर्च कितना हुआ? नुकसान कितना हुआ? इसका पूरा ब्योरा जमा करो। जिसका नुकसान हुआ है, ऐसा दिखेगा, तो उसका लगान माफ कर दिया जाएगा।"

किसानों को लिखना-पढ़ना आता नहीं, वे कैसे जमा खर्च रखते। जो पढ़े हुए जमीदार थे, उनके पास जमा खर्च था। उनको फटाफट छूट मिलने लगी और जो गरीब किसान थे, उनकी कोई पहुँच नहीं थी।

उस दिन गोविन्द उस गाँव में आया था। गोविन्द बहुत अच्छा सेवक था। वह चुपचाप सेवा करता था।

"दादा, क्या हमारी लगान माफ नहीं होगी? सब तो हमारा नष्ट हो गया।"

"सरकार जमा खर्च दिखाने को कह रही है।"

"हमारा तो खुला हिसाब है। सब कुछ मुँह से बता सकते हैं। हमारा घर देखिए, सारे मटके बर्तन वगैरह खाली हैं। बर्तन बताएगे कि इस घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है।"
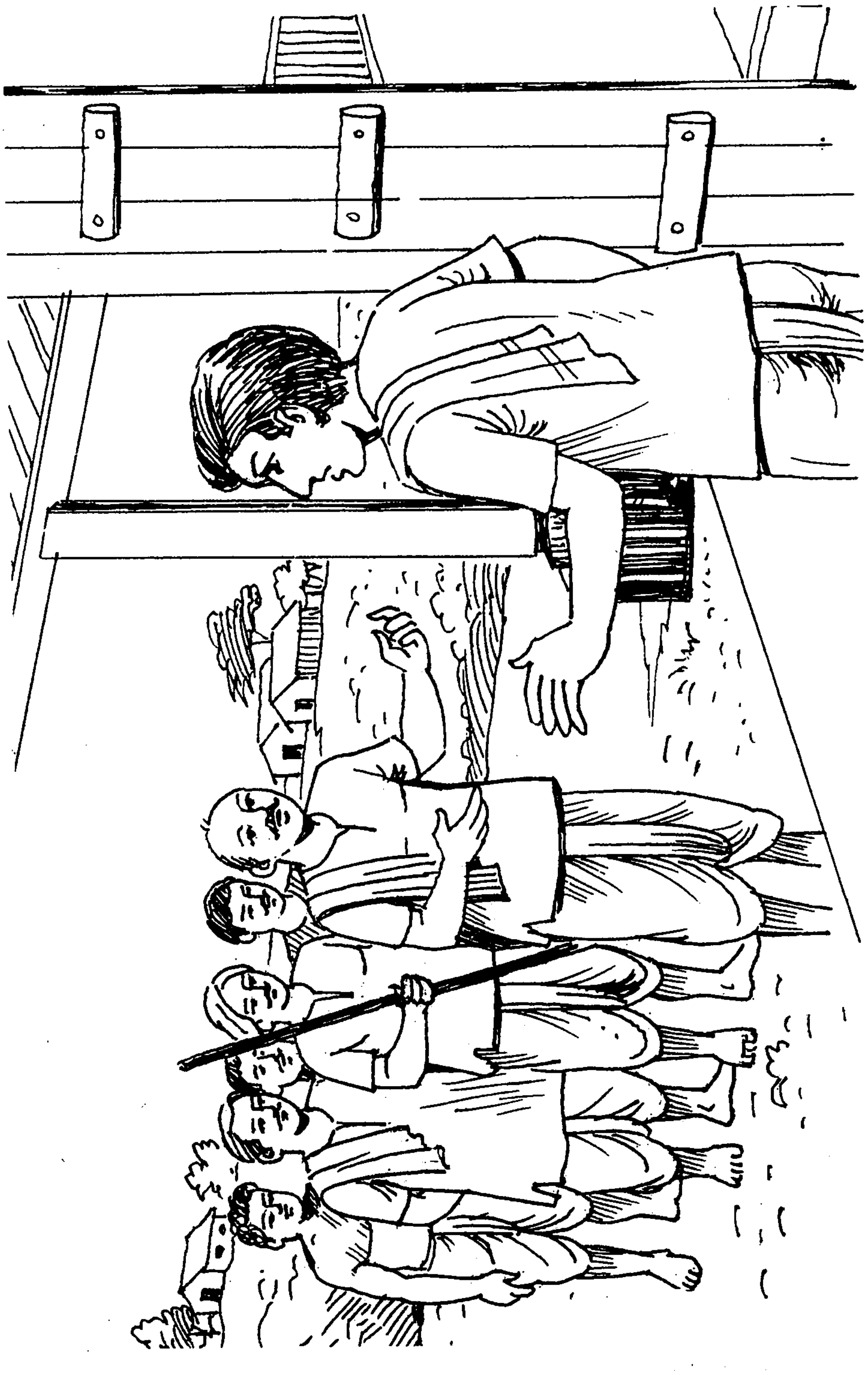
साहबों को तो सफेद पर काला लिखा समझ में आता है। उन्हें हिसाब चाहिए। क्या करें? तुम्हें सारी दुनिया समझाती है, तब भी चार अक्षर आप सीखते नहीं। पढ़ो कहें, तो आप